अंक : 19 | जनवरी-दिसंबर 2025 ISSN : 2231-6191

# जन विकल्प

19

# कविता का समकालीन चेहरा

विकल्प तृशूर

अंक : 19 | जनवरी-दिसंबर 2025 ISSN : 2231-6191

# जन विकल्प

पीयर रिव्यूड पत्रिका

# कविता का समकालीन चेहरा

प्रबन्ध संपादक
**डॉ. के.एम. जयकृष्णन**

संपादक
**डॉ. पी. रवि**

सह संपादक
**डॉ. बी. विजयकुमार**
**डॉ. निम्मी ए.ए.**

सलाहकार समिति
**रवि भूषण** (रांची)
**विनोद शाही** (जालंधर)
**वि. कृष्णा** (हैदराबाद)
**देवेन्द्र चौबे** (नई दिल्ली)
**विनोद तिवारी** (नई दिल्ली)

विकल्प तृशूर

**संपादन सहयोग**

डॉ. के.जी. प्रभाकरन　　डॉ. वी.जी. गोपालकृष्णन
डॉ. ए. सिन्धु　　डॉ. रश्मि कृष्णन

**पीयर रिव्यू टीम**

डॉ. के.के. वेलायुधन, प्रोफेसर (Rtd), करुकुट्टी, एरणाकुलम, केरल।
डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी, प्रोफेसर, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली वि.वि. दिल्ली।
डॉ. प्रज्ञा, प्रोफेसर, किरोड़ी मल कॉलेज, दिल्ली वि.वि., दिल्ली।
डॉ. उमा शंकर चौधरी, स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, दिल्ली वि.वि., दिल्ली।
डॉ. प्रोमिला, एसोसिएट प्रोफेसर, EFLU, हैदराबाद, तेलंगाना।
डॉ. महेश एस., एसिस्टेंट प्रोफेसर, कालिकट वि.वि., मलप्पुरम, केरल।

**आवरण, टाईप सेटिंग एवं लेआउट**

विपिन दास

**कार्यालय संपर्क**

VIKALP BHAVAN
Puthurkkara, Ayyanthole P.O., Thrissur-680 003, Kerala.
Phone: +91-8547568534, 94463 58534
Email: vikalpthrisur@gmail.com
Website: www.vikalpthrisur.org

**संपादकीय संपर्क**

P. Ravi, 'Parayil'
61-B, Kolottimoola Road, VKC P.O.,
Thevakkal, Ernakulam, Kerala-682 021
Phone: +91-9446269365
Email: 456raviparayil@gmail.com

**सहयोग राशि**

यह अंक : **रु. २००/-**
चार अंक : **रु. ८००/-**

संपादन एवं संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक।
पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।
संपादक एवं संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।
समस्त विवाद तृशूर न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

# अनुक्रम


संपादकीय : गहराता संकट और कविता ..... 5

1. हम कविताओं के मरण को देख रहे हैं
   अच्युतानंद मिश्र ..... 7
2. बाजारवाद के वर्चस्व के बीच कविता की जनपक्षधरता
   सिद्धार्थ शंकर राय ..... 12
3. समकालीन हिंदी कविता में प्रेम के अनेकार्थक परिदृश्य
   प्रतिमा प्रसाद ..... 21
4. सभ्यता विमर्श और समकालीन कविता
   राजेश्वरी के. ..... 34
5. कविता में किसान : श्रम और शोषण के आयाम
   बलवंत कौर ..... 39
6. स्त्रीवाद के विविध आयाम और आधुनिक हिन्दी कविता
   नीलम ..... 50
7. दलित कविता : न्याय का स्वर
   बजरंग बिहारी तिवारी ..... 58
8. जंगल, ज़मीन और अनुभव की कविताएँ
   श्रीलेखा के.एन. ..... 62
9. विकास का आतंक
   अपर्णा ए. ..... 69
10. जीवन के राग-विराग को रचती कविताएँ
    सुचिता वर्मा ..... 75
11. कविता की कटार
    निशांत ..... 85
12. सामाजिक चेतना की कविताएँ
    हुसैनी बोहरा ..... 91

13. धरती की महक वाली कविता
सुप्रिया के.पी. ..... 106
14. जीवन वैविध्य के कवि
शरद कुमार ..... 116
15. भूमंडलीकरण के खतरों के बीच अविभाजित मनुष्यता का शोकगीत
प्रमोद कोवप्रत ..... 122
16. समकालीनता का इतिहास
विजयकुमार ए.आर. ..... 128
17. कविता के झरोखे से इतिहास की झलक
के.जी. प्रभाकरन ..... 133
18. समकालीनता के मर्माहत विवेचक
अजय कुमार तिवारी ..... 142
19. उम्मीदों और संभावनाओं से बना बृहत कोलाज
लीना सामुवल ..... 153
20. कविता की एक सहज अभिव्यक्ति
वैष्णव एन.यू. ..... 160
21. कविता और मनुष्यता के बीच कवि
अवनीश यादव ..... 167
22. यहाँ मनुष्यता एकमात्र सच्चाई है तथा संघर्ष एकमात्र सांस्कृतिक कर्म है
प्रभाकरन हेब्बार इल्लत ..... 177
इस अंक के लेखक ..... 207

**संपादकीय**

# गहराता संकट और कविता

रूस के विघटन के साथ शीतयुद्ध समाप्त हुआ और अमेरिका केन्द्रित एक नयी अर्थ-व्यवस्था विश्वभर में प्रबल होने लगी। पूरे विश्व में एक अवांछित परिवर्तन इसके साथ अनुभव होने लगा। समाजवादी स्वप्न पर गंभीर धक्का लगा। कई समाजवादी देश इस नई अर्थ-व्यवस्था का अनुगमन व अनुसरण करने को मजबूर हो गए। बीसवीं सदी के अन्तिम दशक में भारत भी इसकी ओर जल्दी झुकने लगा। विश्वग्राम के बहाने उदारीकरण, निजीकरण और बाजारीकरण के लिए दरवाजा खोला गया। इसी के तहत हमारे लोकतंत्र ने भी समाजवादी धर्मनिरपेक्ष विशेषणों को छोडकर उदार लोकतंत्र का स्वरूप ग्रहण किया। पूंजीपतियों और बहुराष्ट्रीय निगमों के दबाव में वेलफेयर स्टेट की जगह विकासवादी स्टेट में देश बदल गया। विकास किसका है आम जनता इस विकास की बाढ़ को तैर पाएगी, यह भी एक सवाल है। शोषण के लिए नए एवं पुराने रास्ते खुल गए, गरीबी पूर्वाधिक मात्रा में अपना मुँह खोलने लगी। जनतांत्रिक सत्ता में जनता का अधिकार चुनाव के दिन मात्र रह गया। विश्व बैंक, आई एम एफ, आई डी बी आदि के आग्रहों को अनुकूलन करने वाले लोग प्रशासन के पदों पर बैठने लगे। चुनाव कुर्सी पाने के संघर्ष में सिमट गया और लोकतंत्र लंगड़े घोडे के समान एक ही जगह चक्कर खाने लगा। इस लंगड़े घोड़े की हालत को लेकर राज्यबर्धन ने एक कविता लिखी है - उस लंगड़े घोड़े को/ चाबुक मारने/ क्या फायदा/ जिसकी चारों टांगें/ घुड़सवार ने ही/ तोड़ दी हो।/ घुड़सवार का मकसद तो सिर्फ/ घोड़े पर सवार होना था/ दरअसल उसे/ कहीं जाना नहीं। - इस तरह गद्दी पर विराजमान शासक महज फेसिलिटेटर की भूमिका निभाने लगा। घोड़े पर सवार होने के लिए नेता जाति, धर्म, नस्ल का दुरुपयोग करने लगा। परिणाम यह निकला कि सत्ता की छाया में ये शक्तियाँ मनमानी करने लगीं। बाबरी मसजिद ध्वंस इस दशक का हादसा मात्र नहीं, उसका प्रत्यावर्तन लगातार होने लगा। आराधनालय अध्यात्म व भक्ति को किनारा करके पर्यटन को प्रोत्साहन करने वाले केंद्र बन गए, जिससे सरकार तथा वैश्विक दौर के भक्त दोनों खुश हो रहे हैं।

दूसरी ओर जल-जंगल-जमीन और उससे जुड़ी बातों के लिए संघर्ष करते आदिवसी जनता है, अपने अधिकारों एवं अस्मिताओं के लिए लड़ते दलित एवं अल्पसंख्यक हैं, सबसे उपेक्षित स्त्री का अथक विद्रोह है और हमेशा और हर कहीं शिकार बनते प्रकृति-पर्यावरण-पारिस्थितिकी है। इन सबके दुख-दर्द, वेदना तथा संघर्ष को शब्दबद्ध करने का साहस कविता कहाँ तक करती है, इस पर फोकस करना इस अंक का उद्देश्य है।

**डॉ. पी. रवि**